जीविका
ग्रामीण विकास विभाग, बिहार सरकार

जीविका समाचार पत्रिका

।। माह – जनवरी 2021 ।। अंक–06 ।। केवल आंतरिक वितरण हेतु।।

अन्दर के पृष्ठों में...

कृषि उद्यमिता विकास से ग्रामीण क्षेत्र में बढ़ा रोजगार का अवसर (पृष्ठ – 02)

मलबरी रेशम उत्पादन से राधा देवी की चमकी किस्मत (पृष्ठ – 03)

स्ट्रॉबेरी की खेती से आसान हूई स्वाबलंबन की राह (पृष्ठ – 04)

कृषि क्षेत्र को सुलभ एवं समृद्ध बनाने की निरंतर पहल

बिहार के ग्रामीण क्षेत्र में निवास करने वाले अधिकतर परिवारों की आजीविका आज भी कृषि पर निर्भर है। इसलिए कृषि बिहार की अर्थ व्यवस्था का सबसे महत्त्वपूर्ण क्षेत्र बना हुआ है। जीविका स्वयं सहायता समूहों से जुड़े ज्यादातर परिवारों की भी आजीविका का मुख्य साधन कृषि एवं इससे संबंधित क्षेत्र है। इस लिए जीविका परियोजना कृषि क्षेत्र से जुड़े परिवारों में सकारात्मक परिवर्तन के लिए निरंतर प्रयास कर रही है। कृषि को उन्नत बनाने के लिए जीविका कृषि क्षेत्र में निरंतर नयी तकनीक के बारे में जीविका दीदियों को प्रशिक्षित करने का कार्य कर रही है। दीदियों के लिए कृषि को सुगम बनाने हेतु संकुल संघ एवं ग्राम संगठन के स्तर पर कस्टम हायरिंग सेंटर एवं मिनी टूल किट बैंक स्थापित किया गया है, जहाँ कई तरह के कृषि यंत्र उपलब्ध हैं। जीविका दीदियाँ इन कृषि यंत्रों को किराये पर लेकर खेती एवं इससे संबंधित कार्यो के लिए उनका उपयोग कर रही हैं। इन कृषि यंत्रों के इस्तेमाल के फलस्वरूप दीदियों का समय एवं पैसे की बचत हो रही है और शारीरिक मेहनत भी कम हो गया है।

किसानों के उत्पादों के बेहतर बाजार मूल्य के लिये जीविका में उत्पादक समूह का गठन किया गया है। उत्पादक समूह एक स्व–प्रबंधित व्यावसायिक संगठन है जिससे जुड़े सदस्य उत्पादकता, बाजार संबद्धता का कार्य उत्पादक समूह के माध्यम से करते हैं। इसका मुख्य उद्देश्य किसानों के उत्पाद का उचित मूल्य विपणन के माध्यम से दिलाना है। उत्पादक कंपनियों एवं उत्पादक समूहों के माध्यम से दीदियों द्वारा उत्पादित अनाज, फल एवं सब्जियों की खरीद–बिक्री कर उनको अधिक लाभ दिलाया जा रहा है। कृषि क्षेत्र में उद्यमी तैयार कर ग्रामीण क्षेत्र में उद्यमशीलता को बढ़ावा दिया जा रहा है। कृषि उद्यमशीलता से कृषि उद्यमियों को रोजगार मिल रहा है और किसानों को सस्ते दरो पर अपने गाँव के समीप ही खाद, बीज और बैकिंग सेवाएं उपलब्ध हैं। जीविका दीदियों एवं उनके परिवार के सदस्यों के बेहतर स्वास्थ्य एवं पोषण के लिए पोषण बगीचा एवं जैविक खेती को बढ़ावा दिया जा रहा है। जीविका द्वारा कृषि से संबंधित विभिन्न योजनाओं का लाभ जीविका दीदियें को उपलब्ध कराने के लिए कृषि चौपाल लगा कर उन्हे जागरूक किया जा रहा है।

जीविका ने किसानों को दो तरीके से अपनी आमदनी बढ़ाने का रास्ता दिखाया। पहला रासायनिक खादों का प्रयोग न करना तथा दूसरा उनके द्वारा उत्पादित अन्न का उचित मूल्य। साथ ही जलवायु परिवर्तन होने की स्थिति में सही उपज करने के लिए भी जीविका द्वारा वर्ष 2016 से **Sustainable Livelihoods and Adaptation to Climate Change (SLACC)** परियोजना शुरुआत की गयी।

इसी तरह जीविका पूरे बिहार में कृषि पद्धति में परिवर्तन के माध्यम से किसानों को अच्छी आमदनी और बेहतर उत्पादन के लिय जमीनी स्तर पर कार्य कर रही है। जीविका कृषि को अधिकाधिक लाभप्रद उद्योग के रूप में विकसित करने की दिशा में कार्यरत है।

कृषि उद्यमिता विकास से ग्रामीण क्षेत्र में बढ़ा रोजगार का अवसर

पूर्णियाँ जिला के धमदाहा प्रखंड अंर्तगत रंगपुरा दक्षिण पंचायत के मिल्की गाँव की त्रिवेणी देवी ने कृषि उद्यमी (ए॰ई॰) के रूप में अपनी पहचान बनाने में सफलता प्राप्त की है। शीतल जीविका महिला ग्राम संगठन में 2018 से वी॰आर॰पी॰ पद पर कार्य करने के उपरांत त्रिवेणी देवी का चयन जीविका द्वारा कृषि उद्यमी के रूप में किया गया। जीविका एवं सिंजेंटा फाउंडेशन इंडिया के संयुक्त प्रयास से त्रिवेणी देवी ने राष्ट्रीय ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज संस्थान, हैदराबाद द्वारा कृषि उद्यमशीलता–विशेष कर कृषि विस्तार सेवाएं एवं एकीकृत पोषक तत्व प्रबन्धन पर संचालित प्रशिक्षण में भाग लिया। प्रशिक्षण के उपरांत उन्होने शीतल जीविका महिला ग्राम संगठन के सहयोग से अपना कृषि से संबंधित उद्यम की शुरुआत की। इसके के लिए पैसे की आवश्यकता पड़ने पर उन्हें ग्राम संगठन से 30,000 रुपये ऋण मिल गया। त्रिवेणी देवी ने एक मिनी पॉलीहाउस का निर्माण किया। पॉली हाउस में उसने टमाटर एवं बैंगन की पौधशाला (नर्सरी) में पौधा तैयार किये। पौधशाला में तैयार टमाटर एवं बैंगन की पौधों को उन्होने अपने 10 कट्ठा खेत में लगाने के अलावा 1500 रुपये का पौधा दूसरी दीदियों को बेच दिया। पौधशाला में तैयार पौधों को बेचने से त्रिवेणी देवी को औसतन 5 हजार से 6 हजार के बीच मासिक आमदनी हो जाती है। अब वह 150 किसान सदस्यों के साथ कृषि कार्य से जुड़ी हुई हैं।

जुट की बुनाई

कटिहार के कदवा पंचायत के भर्री पंचायत अंतर्गत जाजा गाँव की रहनी वाली हैं सरोजनी देवी। यह बाढ़ प्रभावित गाँव है। इस गाँव के ज्यादा तर लोग पिछड़ी जाति के हैं और गरीब हैं। गाँव की महिलाए जुट की चटाई बनाती हैं यह इनका पारंपरिक पेशा है। चटाई बनाने के लिए जुट के रेशों का उपयोग कच्चे माल के रूप में किया जाता है। जुट का उत्पादन पानी–बहुल क्षेत्र में होती है। स्वयं सहायता समूह में शामिल होने से पहले ये महिलाए अपने उत्पाद की बिक्री बिचौलिया के माध्यम से करती थी, जो बदले में उन्हें कम पैसे देते थे। जिस कारण इन महिलाओं की हालत में सुधार नहीं हुआ।

समूह में शामिल होने के बाद वे समूह से ऋण ले सकती हैं। इस ऋण के साथ उन्होंने अपने उत्पाद के उत्पादन और विपणन गतिविधियों की देखरेख के लिए सामूहिक स्तर पर उत्पादन करना है। इससे उन्हें कच्चे माल की खरीद में मदद मिलती है। वे अब अपने उत्पादों के लिए अच्छा रिटर्न पाने की स्थिति में हैं और साहूकार के चंगुल से मुक्त हैं। उनके पास अब नियमित आय है। प्रत्येक महिलाएँ घर के सभी काम को करने के बाद सालाना 10 से 12 हजार रूपए कमा लेती हैं।

सपनों को मिला पंख

बेरोजगार युवक–युवतियों को रोजगार उपलब्ध कराने के बिहार सरकार के संकल्प के साथ बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, जीविका भी काम कर रही है। राज्य के लगभग सभी जिलों में दीन दयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्य योजना अंतर्गत रोजगार सह मार्गदर्शन मेला का निरंतर आयोजन करते हुए प्रवासी श्रमिकों और बेरोजगार युवक–युवतियों को रोजगार उपलब्ध कराया जा रहा है। इनमें वे लोग भी शामिल हैं जिनकी नौकरी कोरोना काल में छूट गई थी और वे अपने गाँव लौट आये थे। सिर्फ कोरोना काल में जीविका द्वारा 2 लाख से अधिक प्रवासी परिवारों को स्वयं सहायता समूहों से जोड़कर प्रवासी कामगारों को कैडर के रूप में चयनित करते हुए रोजगार उपलब्ध कराया गया। जिला बक्सर का उदाहरण लें तो तीन माह में बेरोजगार युवक–युवतियों को रोजगार सह मार्गदर्शन मेला के माध्यम से विभिन्न कंपनियों में अलग–अलग पदों के लिए नियुक्ति पत्र दिये गये। लॉक डाउन में ढिलाई दिए जाने के बाद सितम्बर माह में वर्चुवल रोजगार सह मार्गदर्शन मेला आयोजित किया गया। मेला के माध्यम से तीस प्रतिभागियों को उनकी योग्यता, हुनर एवं योग्यता के अनुरूप नौकरी दी गई। इसके बाद 23 दिसंबर को भी जीविका द्वारा पुनः रोजगार सह मार्गदर्शन मेला का आयोजन किया गया। इस मेला के माध्यम से भी 228 प्रतिभागियों को मेला स्थल पर ही जिला पदाधिकारी, बक्सर द्वारा नियुक्ति पत्र दिया गया। राज्य के सभी जिलों में बेरोजगार युवक–युवतियों के सपनों को उड़ान देने का कार्य जीविका द्वारा किया जा रहा है।

मलबरी रेशम उत्पादन से राधा देवी की चमकी किस्मत

नूतन जीविका समूह एवं अनुप्रिया जीविका महिला ग्राम संगठन की सदस्य राधा देवी और उनका परिवार परंपरागत रूप से खेती एवं पशुपालन से जुड़ा है। मलबरी की खेती एवं रेशम उत्पादन के बारे में उन्हें पहले कोई ज्ञान नहीं था। लेकिन मुख्यमंत्री कोशी मलबरी परियोजना शुरू होने के बाद जब जीविका के ग्राम संगठन द्वारा मलवरी कृषकों की पहचान की जा रही थी जब राधा देवी ने भी मलवरी की खेती से जुड़ने की इच्छा जताई। विधिवत प्रशिक्षण के बाद राधा देवी मलवरी की खेती एवं कीट– पालन से जुड़े कार्य में दक्ष हो पाइ। राधा देवी ने कोशिकी जीविका मलबरी उत्पादक समूह के तहत जुलाई 2016 से मलबरी की खेती प्रारंभ की। मलबरी का पौधा तैयार होने के बाद उसने मलबरी कीट पालन के लिए 100 डीएफएलएस (रोग मुक्त चक्ता) की माँग की। इससे उन्होने पहले ही वर्ष लगभग 25 किलोग्राम कोकून का उत्पादन किया। इस कोकून को कोशिकी मलबरी उत्पादक समूह द्वारा 350 रुपये प्रति किलोग्राम की दर खरीद लिया गया। इससे राधा देवी को 8,750 रुपये की आमदनी हुई। महज ढाई माह की मेहनत के बाद उन्हे यह आमदनी हुई। राधा देवी इस समय साल के सभी 5 सीजन के लिए मलबरी कोकून का उत्पादन करती है। इससे उन्हें साल भर में औसतन 35 से 40 हजार रुपये तक की आमदनी हो जाती है। महज आधा एकड़ खेत में धान या गेहूँ की फसल लगाने से इतनी आय होना मुश्किल था। लेकिन मलबरी की खेती ने आय का अतिरिक्त साधन दिया है। इसके अलावा शुरुआत के तीन वर्षों में मलबरी की खेती के लिए उन्हे मनरेगा से सौ–सौ दिन की मजदूरी एवं अन्य सुविधाएँ प्राप्त हुई हैं। साथ ही उद्योग विभाग की ओर से उन्हें कीट पालन उपस्कर भी प्राप्त हुआ है।

स्ट्रॉबेरी की खेती से आसान हूई स्वावलंबन की राह

कृषि में स्वावलंबन की दिशा में स्ट्रॉबेरी की खेती एक अच्छा प्रयास है और इसमें शामिल होने वाली दीदियों के लिए यह जीविकोपार्जन का एक अच्छा विकल्प है। स्ट्रॉबेरी का उपयोग अलग अलग तरह की चीजों के निर्माण में किया जाता है जिनमें जैम, जेली, आइस्क्रीम, सीरप जैसे खाद्य पदार्थ मुख्य रूप से शामिल हैं। इसके अलावा एक फल के रूप में भी इसका उपयोग होता है। रोजाना सेवन के लिए भी यह उपयोगी होता है। इसीलिए स्ट्रॉबेरी का बाजार भी काफी विस्तृत है।

स्ट्रॉबेरी की खेती आम तौर पर साल भर ठन्डे रहने वाले पहाड़ी क्षेत्रों में ही संभव हो पाती है। लेकिन बिहार के औरंगाबाद जिले के चिलकी बीघा गाँव में प्रतिकूल वातावरण में स्ट्रॉबेरी की खेती की जा रही है। इसके पीछे जीविका दीदियों द्वारा किया गया प्रयास और नयी तकनीक है। इस गाँव में नियंत्रित वातावरण में स्ट्रॉबेरी की खेती टपकन सिंचाई एवं उन्नत नस्ल के बीजों का इस्तेमाल की जा रही है। 7 स्वयं सहायता समूहों से सम्बद्ध 17 महिलाएं स्ट्रॉबेरी की खेती कर रही हैं और उचित मुनाफा प्राप्त कर रही है।

स्ट्रॉबेरी की खेती करने वाली महिलाओं का कहना है कि स्ट्रॉबेरी की खेती श्रमसाधन और कठिन है। सही ध्यान नहीं रखने पर पौधे बहुत जल्द मुर्झा जाते हैं। आधे एकड़ भूमि में स्ट्रॉबेरी की खेती करने का खर्च लगभग 9 लाख रुपया होता है। ये दीदियाँ अच्छा काम कर रहीं है और अब तक लगभग 7 से 8 लाख रुपये का मुनाफा कमा चुकी हैं। फलस्वरूप स्ट्रॉबेरी की खेती करने के लिए जो ऋण लिया गया है उसे भी ससमय चुका पा रही हैं।

जीविका, बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, विद्युत भवन – 2, बेली रोड, पटना – 800021, वेबसाइट : www.brlps.in

संपादकीय टीम
- श्री ब्रज किशोर पाठक – विशेष कार्य पदाधिकारी
- श्रीमती महुआ राय चौधरी –कार्यक्रम समन्वयक (जी.के.एम.)
- श्री पवन कुमार प्रियदर्शी – परियोजना प्रबंधक (संचार)

संकलन टीम
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, समस्तीपुर
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, पूर्णिया
- श्री बिप्लब सरकार – प्रबंधक संचार, कटिहार
- श्री रौशन कुमार – प्रबंधक संचार, बक्सर
- श्री विकाश राव – प्रबंधक संचार, सुपौल
- श्री अभिजीज मुखर्जी – यंग प्रोफेशनल